प्राचीन प्रस्तर एवं हड्डियों से निर्मित औज़ार

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

एक हालिया अध्ययन से पता चला है कि **प्राचीन पूर्वजों** ने **1.5 मिलियन वर्ष पूर्व हड्डी के औज़ारों** का उपयोग करते थे, जो कि अनुमान से लगभग **1 मिलियन वर्ष पूर्व** की बात थी, जिसने इस विचार को **चुनौती** दी कि औज़ार बनाना **मनुष्यों के लिये अद्वितीय** था।

- **औज़ार निर्माण की उत्पत्ति:** सबसे **प्राचीन प्रस्तर के औज़ार (3.3 मिलियन वर्ष)** और **हड्डी के औज़ार (1.5 मिलियन वर्ष)** से यह संकेत मिलता है कि औज़ारों का प्रयोग **होमो से भी पूर्व** का है और संभवतः **पूर्व के मानवों** द्वारा इसका प्रयोग किया जाता था।
    - यह तर्क दिया जाता है कि औज़ार निर्माण के लिये **वैचारिक विचार** की आवश्यकता होती है और यह **केवल मनुष्यों के लिये ही** है।
- **मानव विकास का जीवाश्म: वर्ष 1974** में खोजा गया, **3.2 मिलियन वर्ष पुराना मानव पूर्वज** लूसी ने विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, संभवतः उसने **औज़ारों के लिये अपने हाथों का उपयोग** किया था।

भारत के मानव इतिहास में प्रस्तर के औज़ार:

अवधि	औज़ार और प्रौद्योगिकी	प्रमुख स्थल
निम्न पुरापाषाण काल (600,000 – 150,000 ईसा पूर्व)	**हाथ की कुल्हाड़ी,** क्लीवर, चॉपर (काटने, छीलने के लिये)	बोरी (महाराष्ट्र), **सोन और सोहन घाटियाँ (पंजाब)**, डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्य प्रदेश)
मध्य पुरापाषाण काल (150,000 – 35,000 ईसा पूर्व)	**फ्लेक्स, ब्लेड, पॉइंट,** बोरर, स्क्रेपर्स (छोटे प्रस्तर के टुकड़ों से)	नर्मदा घाटी, **बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश),** तुंगभद्रा क्षेत्र (दक्षिण भारत)
उच्च पुरापाषाण काल (35,000 – 10,000 ईसा पूर्व)	**ब्लेड, ब्यूरिन, स्क्रेपर्स** (अधिक परिष्कृत और विविध)	**भीमबेटका (मध्य प्रदेश)**, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात रेत के टीले
मध्यपाषाण युग (9000 – 4000 ईसा पूर्व)	**माइक्रोलिथ** (छोटे प्रस्तर के औज़ार, जिन्हें प्रायः मिश्रित औज़ार के रूप में उपयोग किया जाता है)	बागोर (राजस्थान), **आदमगढ़ (मध्य प्रदेश),** कृष्णा नदी के दक्षिण में
नवपाषाण युग (7000 – 5500 ईसा पूर्व)	**आयताकार कुल्हाड़ियाँ**, पॉलिश प्रस्तर की कुल्हाड़ियाँ	**मेहरगढ़ (बलूचिस्तान),** बुर्ज़होम (कश्मीर), गुफकराल (कश्मीर), सेनुवार (बिहार)

और पढ़ें: [पाषाण युग में लकड़ी की कलाकृतियाँ](#)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ancient-stone-and-bone-tools